भाषा और परिवेश

भाषा और परिवेश का परस्पर अन्योन्याश्रित संबंध है, इसे भाषा-विज्ञान की मान्यताएं प्रमाणित कर चुकी हैं । इसीलिए आरंभिक भाषा-शिक्षण की कोई भी प्रक्रिया बच्चे के परिवेश को समझे बगैर सार्थक नहीं हो सकती । लोक जुम्बिश परियोजना के अंतर्गत दिगन्तर प्रतापगढ़ (चित्तौड़), थानागाजी (अलवर) ओर राजगढ़ (चूरु) में अकादमिक मदद प्रदान करने का काम कर रहा है । प्रतापगढ़ (चित्तौड़) के आदिवासी अंचल में किया गया यह सर्वेक्षण भी भाषा-शिक्षण के लिए योजना और सामग्री-निर्माण की पूर्व तैयारी बतौर है । इस सर्वेक्षण समूह के सदस्य थे - आलोक, राजेन्द्र और हीरा लाल । यहां जनवरी '98 में किये गये इस सर्वेक्षण की रपट का एक अंश प्रकाशित कर रहे हैं ।

भौगोलिक परिवेश

प्रतापगढ़ के ग्रामीण अंचल का भौगोलिक परिवेश काफी विलक्षण है जिनमें सहज शिक्षा का कार्यक्रम चल रहा है। समतल नहीं होने के कारण खेती के लिए उपयुक्त जमीन यहां कम है । जमीन चिकनी तथा काली है एवं कई स्थानों पर लाल रंग की है, दोनों ही प्रकार की मिट्टी में कंकड पत्थर बहूतायत में मिलते हैं। जमीन पर कहीं नाले बह रहे हैं तो कहीं हरे भरे खेत नजर आते हैं। मगरों के आस-पास कुछ ढालू सी जमीन जो नीचे तक चली जाती है, इन्हें या लोग खोरा या खोरी बोलते हैं, और ऐसे कई खोरे इस अंचल में हैं। मगरों तथा नालों में जो पत्थर पाये जाते हैं वे कुछ-कुछ सलेटी-सा रंग लिये हुए एवं गोल-गोल से होते हैं। ऐसा लगता है जैसे किसी ने उन्हें गढ़कर गोल बनाया हो। धमोत्तर तथा देवगढ़ संकुलों में पानी की बहुतायत थी। इस इलाके में कुओं को बांधने की जरूरत नहीं पड़ती। थोड़ी खुदाई पर ही पानी आ जाता है। कुंओं की खुदाई साधारणत:मशीनों से करनी पड़ती है क्योंकि जमीन पथरीली है तथा नीचे चट्टानें हैं। चट्टानों के कारण मशीन से भी खुदाई मुश्किल से हो पाती है।

यहां के मगरों (पहाड़ियों), खेतों व मैदानों में जो वनस्पति पाई जाती है, उनमें टिमरू (तेन्दू), सागवान, कड़ली, गोदला (गोंद का पेड़), खाखरा, आम, बबूल, खेजड़ी, झाड़, बबूल, विलायती आंकड़ा, आदि पाये जाते हैं। नीम यहां बहुत कम दिखाई दिये। बहुतायत से जो पेड़ पाये जाते हैं वे हैं, आम, सागवान, खाखरा, टिम महुआ, बेर की झाडी। इनके अलावा करौन्दे व जामुन भी नालों के किनारे व मगरों पर स्वत: ही उगे हुए मिलते हैं। बांस भी यहां कई स्थानों पर देखने को मिलते हैं।

ग्रामीण अंचलों में लोगों का मुख्य धन्धा खेती करना है। लोग आस-पास मजदूरी करने भी जाते हैं। यहां पैदा की जाने वाली फसलो में खरीफ में मक्का, सोयाबीन, थूअर (अरहर), कपास, उड़द, मूंग, तिल, ज्वार एवं कांगणी आदि हैं। रबी की फसलों में गेहूं, चना, अलसी, अफीम, जौ, चांवल, सरसों, मसूर, कोदरा (बाजरा जैसा) आदि आती हे। इनके अलावा सब्जियों में मैथी, रैंगण (बैंगन), भैण्डा (भिण्डी), गोभी, आलू, मटर, मिर्ची, पालक, गलकी, तुरलई, कोला (कद्दू) पापड़ा (बालो), आल (घिया) आदि होती है। इनके अलावा टमाटर, लहसुन, प्याज आदि भी पैदा किये जाते हैं।

खाने के रूप में मुख्य रूप से मक्का, ज्वार, गेहूं, कोदरा आदि को काम में लेते हैं। सोयाबीन आदि फसलें मुख्य रूप

से बेचने के लिए पैदा करते हैं। यहां की जमीन अफीम के लिए उपयुक्त है, इसकी खेती के लिए लोगों को सरकार से इजाजत लेनी पड़ती है। एक निश्चित रकबे में ही सरकार अफीम बाने की इजाजत देती है। तेन्दू के पत्तों को बेचकर व बीड़ी बनाकर भी लोग आय प्राप्त करते हैं।

यहां के लोग जो कि सीधे-सीधे खेती से जुड़े हुए हैं, अपनी आवश्यकता के अनुसार पशुओं को भी पालने का काम करते हैं। पाले जाने वाले पशुओं में बकरी, गाय, भैंस, बैल, भोड़, ऊंट, गधे इत्यादि हैं। गाय बैलों का कद अपेक्षाकृत कुछ छोटा है।

यहां पाये जाने वाले पक्षियों मे मोर, तीतर, कमेड़ी, कबूतर, बुलबुल, खातीचिड़ा, कौआ, तोताा, चिड़िया, चीज, लेलकी, टेटोड़ी, मुर्गी, सोनचिड़ी (बिछड़ी), गिद्ध, बाज बगुला इत्यादि हैं।

ग्रामीण अंचल में कुछ गांवों में तालाब आदि भी देखने को मिलते हैं जैसे देवगढ़, नारायण खेरा, आम्बालों कूड़ो आदि में।

पशुओं के लिए रजका भी पैदा करते हैं। मगरों में जगह-जगह बहते हुए नाले भी देखने को मिले।

यहां के इलाके में गांव एक जगह नहीं बसे हुए हैं। ये दूर-दूर फैले हुए हैं। आस-पास के दो पांच घरों कोमिलाकर फला कहा जाता है। अधिकांश लोगों के मकान उनके खेत व कुओं के पास हैं। गांव में कई जगह प्राथमिक विद्यालय भी देखने को मिले। लेकिन, देखने में यह आया कि ये विद्यालय या तो देर से खुलते हैं, जल्दी बन्द हो जाते हैं, या कभी - कभी खुलते ही नहीं। सरकारी स्कूलों के बालक अनौपचारिक शिक्षा केन्द्रों में भी आ जाते हैं।

सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश

ग्रामीण अंचलों में जो लोग रहते हैं, उनमें बहुतायत मीणा जाती के लोगों की है। उनमें भी ''रावत'' गोत्र के प्रमुख हैं। अन्य जातियां जैसे - राजपूत, ब्राह्मण, पुजारी, नाई, कलाल, कुम्हार, खाती इत्यादि किसी किसी गांव में देखने को मिले और वे भी बहुत कम संख्या में।

आवास व रहन सहन

ज्यादातर लोग कच्चे मकानों में रहते हैं। ये मकान प्राय: इतने बड़े-बड़े बने होते हैं कि इनमें परिवार के रहने, अनाज आदि सभी सामान रखने, जानवरों को बांधने आदि की गुंजाइश होती है। मकानों की दीवारें पत्थर - मिट्टी या ईंटों से तैयार होती है। मकानों के वे हिस्से जिधर पशुओं आदि को बांधा जाता है उनकी दीवारों के स्थान पर या तो पेड़-पौधों की टहनियों आदि से बाड़ खड़ी कर दी जाती है, अथवा लकड़ियों एवं मिट्टी से मिलाकर दीवारें बना दी जाती हैं।

मकानों की छतों के लिए मकान की दीवारों पर लकड़ियां व्यवस्थित कर उनके ऊपर प्राय: मिट्टी के कोल्हू (खपरैल) चढ़ाए जाते हैं। ये कोल्हू, ये लोग वहां भी बना लेते हैं, एव मोल भी खरीदे जाते हैं। मकान बनाने में जो लकड़ी काम में लेते हें, मूलत: सागवान की होती है। मकानों में अनाज आदि रखने के लिये मिट्टी से कोठे बनाये हुए हैं। बड़े वाले कोठ कहलाते हैं तथा छोटे 'कोठियां' कहलाती हैं। पक्के मकान बहुत कम देखने को मिले।

यहां संयुक्त परिवार बहुत कम हैं । बच्चों की शादियां हो जाने के बाद सामान्यत: दो चार साल में बच्चे अपना अलग घर बनाकर रहने लगते हैं, शादी-विवाह सामान्यतया 8 से 12-15 साल तक की उम्र में हो जाते हैं।

पहनावा

पहनावे में महिलायें घाघरा, ओढ़नी, या लूगड़ा, पोलका (ब्लाऊज) पहनती हैं। कुंआरी लड़कियां और कभी-कभी शादीशुदा औरतें भी इधर एक विशेष प्रकार की छाप वाली ओढ़नी ओढ़ती हैं जिसे ''कटकी'' कहा जाता है। कटकी सामान्यतया लाल रंग की होती है तथा उस पर सफेद रंग की, भिण्डी के टुकड़ों जैसी छाप होती है। इसकी कीमत 15 से 80 रुपये तक होती है। यह विभिन्न तरह के कपड़ों में मिलती है।

औरतें जो गहने पहनती हैं, वे लगभग उसी प्रकार के हैं जैसे दिगन्तर के आस-पास के गांवों में पहने जाते हैं। पर, उनके नाम भिन्न हैं। जैसे पांव में कड़ियां, आंवले, पायजेब, तोड़ा (लंगर) आदि पहने जाते हैं। कुंआरी लड़कियां पांवों में

कंडूलें पहनती हैं जो प्राय: चद्दर (जस्ते) के होते हैं। हाथों में लाख का चूड़ा (बहुत कम), चूड़ियां (बिल्लौरी), कानों में झुमके, नाक में कांटा, बाली या नथा, गले में हाली (खूंगाली), हाड़ा साकली, और कमर में कन्दौरा (कणगती) आदि पहनती हैं।

पुरुष धोती कुरता, कमीज, साफा आदि पहनते हैं। नई पीढ़ी के कुछ युवा पेन्ट, बुशशर्ट पहनते हैं। पुरुष भी कहीं कहीं हाथों मेंकडूले, अंगूठी, कानों में बालियां (मुरकी) पहनते हैं। ये गहने इत्यादि विशेष अवसरों पर ही पहने जाते हैं, सामान्यतया नहीं। हमारे अवलोकन में ये देखने में कम ही आये।

यहां के लोगों का खान-पान रहन-सहन काफी साधारण स्तर का है। इन दिनों में लगभग सभी घरों में मक्के की रोटियां बनती हैं और सब्जियां प्राय: जो खेतों में उपलब्ध हो जाती हैं, वही काम में आती हैं, घी-दूध की भी बहुतायत नहीं है। जीवनयापन के साधन जैसे कपड़े, खाने व पहनने की चीजों कीक प्राय: कमी लगी। प्राय: लोग गरीबी के विभिन्न कारणों में शिक्षा की कमी, जनसंख्या की अधिकता, जमीन की कमी, रोजगार के साधनों का अभाव इत्यादि होने के साथ-साथ एक बड़ा कारण संभवतया शराब पीना भी है। इस क्षेत्र में बहुतायत से पाये जताने वाले महुआ के पेड़ों से प्राप्त होने वाले फल से ये लोग स्वयं शराब तैयार करते हैं। यह काफी सस्ती पड़ती है (10 रुपये की एक बोतल)। शराब पीना, घर वालों से झगड़ना, काम नहीं करवाना आदि होता रहता है।

धार्मिक विश्वास/मान्यतायें

ग्रामीण परिवेश में बसने वाले ये लोग देवी-देवताओं में, भूत-प्रेतों में, जादू-टोने आदि में विश्वासव रखते हैं। जादू-टोनों से बचाव के लिये हाथों में तांबे के कड़े, गले में ताबीज आदि पहनना, देवी-देवताओं के लिए मंदिर या उनके स्थान बनवाना एवं पूजा आदि करते हैं। देवताओं में शिव, विष्णु, राम, कृष्ण, पीर, हनुमान, गणेश, दुर्गा, भैरव, भौमियां आदि देवताओं को माना जाता है।

इनके अलावा जब किसी परिवार में असामयिक मौत (विशेषकर युवा अवस्था में) हो जाती है, तो समुदाय में यह मान्यता है कि उस व्यक्ति की आत्मा उसके घर वालों को तंग करती है। इससे बचाव के लिए घर वाले कुछ उपाय जैसे गीत गाना, रात जगाना आदि करते हैं, और उसके बाद नागराज की एक मूर्ति लाकर एक स्थान पर रख देते हैं। इसके बाद मृत आत्मा, घर वालों को परेशान नहीं करती बल्कि विभिन्न कामों में मदद करती है। जैसे : किसी रोग से मुक्ति, संतान की प्राप्ति, धन या रोजगार की प्राप्ति इत्यादि में मदद करती है। जिस स्थान पर ये मूर्तिया रखीं जाती हैं उसे ''हूरजी'' के स्थान पर नागराज की मूर्तिया इकट्ठी होती चली जाती हैं। अवलोकन के दौरान ऐसे कई स्थान देखने को मिले।

अवलोकन के दौरान सामने आई एक बात की ओर तुरन्त ध्यान दिये जाने की जरूरत है। अवलोकन के दौरान सुनने में आया कि, समुदाय में इस प्रकार की धारणा है कि ''प्रयास'' (एक स्वयंसेवी संस्था) लोगोंको क्रिश्चियन (ईसाई) बनाती है। इस समूह का मानना कि समुदाय में फैली इस गलतफहमी को, लोगों से मिलकर दूर किया जाना चाहिए। और इसके लिए ''प्रयास'' द्वारा तुरन्त प्रयास शुरू कर दिया जाना चाहिए। (यह अफवाह प्रयास तक भी पहुंची है)

रीति-रिवाज

शादियों में यहां दहेज का प्रयलन नहीं है। एक शादी में लगभग 10 से 15 हजार रुपये खर्च हो जाते हैं। लड़के व लड़की वालों केलगभग बराबर ही पैसे खर्च होते हैं। फेरों की रस्म दोनों जगह होती है, पहले लड़की वालों के यहां फिर लड़के वालों के यहां। लउकी वालों के यहां से जब बारात वापस लौटती है तो बिना दुल्हन के लौटती है। दुल्हन एक दिन बाद सके परिवार के 2-5 लोगों के साथ दूल्हे के धर लाईजाती है। वहां फिर फेरे आदि की रस्म होती है ओर दुल्हन के हाथों से पास पड़ोस में नारियल आदि बंटवाये जाते हैं। और दुल्हन फिर वापस अपने घर चली जाती है। फिर कुछ दिनों बाद दूल्हा

पक्ष के घर वालों में से कोई बड़ा व्यक्ति (भाई-पिता) जाकर दुल्हन को लिवा लाता है। दुल्हन आठ सात दिन दूल्हे के घर रहकर वापस अपने घर चली जाती है। फिर धीरे धीरे लड़की ससुराल में रहने लग जाती है।

समुदाय में ''नातेदारी'' की प्रथा भी हें इसमे को÷ ऐसी स्त्री, जिसकी शादी हो चुकी है, यदि वह किसी कारण से किसी अन्य पुरुष के यहां जाकर रहने लग जाये यानी उसके सार्ा घर बसाना चाहे तो फिर उसे ''नाता करना'' कहा जाता है। ऐसी स्थिति होने पर लड़की के पहले पति के घर वाले अपनी बिरादरीक के कुछ लोगों के साथ या पंचायत के साथ जाकर लड़की के नये संबंधियों से कुछ पैसे लेकर आते हैं इसे 'झगड़ा चुकाना' कहते हें। यह रकम 5000 से सामान्यतया 15000 तक होती है। ज्यादा भी हो सकती है। नाता कई परिस्थितयों में हो सकता है जैसे (1) लड़की का पति मर गया हो (2) लड़की ससुरालवालों से तंग हो (3) लड़की को ससुराल पसन्द न हो (4) लड़के की पत्नी मर गई हो (5) पत्नी किसी के साथ भाग गई हो (6) घर में सन्तान न हो, लड़की को लड़का या लड़के को लड़की पनसंद न हो, इत्यादि।

प्राय: सभी त्यौंहार बनाये जाते हैं । होली और दिवाली विशेष रूप से मनाई जाती है। होली का त्यौंहार लगभग एक माह तक मनाया जाता है।

भाषा विषयक महत्वपूर्ण तथ्य

इन गावों में लोग ''वागड़ी'' बोली बोलते हैं। ये बोली हिन्दी से तथा अन्य स्थाानीय बोलियों से भी काफी भिन्न है। वयस्कों से हिन्दी में बातचीत किये जाने पर वे लगभग आधी बातें समझ पाते हैं। और जब वे अपनी स्थानीय बोली में जल्दी-जल्दी कुछ बात करते थे तो हम कुद नहीं समझ पाते थे। यदि वे धीरे-धीरे बातें करते तो अवश्य कुछ समझा जा सकता है।

साधारण बच्चे भी हिन्दी बोलने पर बहुत कम समझ पाते हैं जबकि वे बच्चे जो केन्द्रों पर पढ़ने आ रहे हैं, हिन्दी में बात किये जाने पर कुछ समझ लेते हैं । लेकिन, हिन्दी में बात साधारणतया नहीं कर पाते । अनुदेशक, प्रवर्तक आदि हिन्दी लिख, पढ़, बोल व समझ सकते हैं। केन्द्रों पर जो काम होता है उसमें भी अनुदेशक अधिकांश समय अपनी स्थानीय बोली का ही प्रयोग करते हैं। यहां समूहों के अवलोकन तथा कुछ दिनों समुदाय में रहने से भाषा ध्वनियों आदि के बारे में जो अनुभव हुआ उसके अनुसार यहां कुछ ध्वनियों का उच्चारण मानक हिन्दी में उदाहरणार्थ दिया जा रहा है :

ध्वनि	**बदला हुआ उच्चारण**	**उदाहरण**	**मूल शब्द**
''स''	''ह''	हात	सात
''स''	''ह''	हाबुन	साबुन
''स''	''ह''	हरक	सरक

टिप्पणी

ये ''छ'' का उच्चारण भी ''स'' ही करते हैं जैसे छत को सत, ''छतरी'' को '6सतरी''।

दो चार ध्वनियों को छोड़कर अन्य ध्वनियों के उच्चारण में कोई अन्तर नहीं है। जो अन्तर नजर आया, वह उपरोक्त ध्वनियों में ही था, अन्य ध्वनियों का उच्चारण सामान्यतया वही किया जाता है जो हिन्दी में किया जाता है। हां, बोलचाल में चीजों के नाम तथा बोलचाल के सामान्य शब्द स्थानीय बोली के अनुसार कुछ बदले हुए हैं।

पानी	पाणी	पहाड	मगरा
रोटी	रोटा	मटका	गागरा, माटला
मिट्टी	गारा(धूला)	तालाब	खाल
पेड़	रूखंड़ा	मोर	मोरिया

इनके अतिरिक्त अवलोकन के दौरान यह जानने की कोशिश की गयी कि दिगन्तर में काम में लिये जाने वाले शब्द चित्र कार्डों में से बच्चे कितने कार्डों के चित्रों को पहचानते हैं? इस संबंध ममें जो जानकारी मिली वह इस प्रकार है :

1. बच्चे अधिकांश चित्रों को पहचानते हैं। स्थानीय बोली में इन्हें अलग नाम से बोलते हैं।
2. याक, ठठेरा, ऋषि, डक, वक, थरमस, शलगम, षटकोण, आदि को संदर्भ बतायेजानेपर पहचान पाते हैं। याक,ठठेरा, शलगम में विशेष समस्या है।

कुछ केन्द्रों पर बच्चों के साथ किये गये 'अभ्यास करो' में जो स्थिति सामने आयी वह इस प्रकार थी :-

चित्र शब्द	*पहचाना या नहीं*	*क्या बोला/बतायाा गया ?*
1. टमाटर		टमाटर, सेमफल, टामटा, कोला
2. छाता		छतरी, सतरी
3. औरत		औरत, लड़की

इस प्रकार मोटे रूप से कहा जा सकता है कि बच्चे अधिकांश कार्डों के चित्र पहचानते हें तथा कुछ व्यवस्थित प्रयासों के बाद मानक भाषा में इनके नाम सिखाये जा सकते हें। बच्चे निम्न खेल खेलते हैं :

1. गुल्ली-डंडा
2. डोटी (दड़ीमार)
3. कंची
4. घेर (होली पे डंडे से)
5. पतंग उड़ाना
6. रुमाल झपट्टा
7. कबड्डी
8. नेता पहचान

इस परिवेश की भाषा में दो कहानियां व एक गीत नीचे दिये गये हैं :-

कहानी

एक शहर थो। वणा शहर में एक राजो राज करतो थो। वणा राजा ने आठ बेटा था। वी आपस में जोर लड़ाता था। राजा बूढ़ो वई सुको थो। राजा ने वेनो आठो बेटा नी घणी हारू कियो। राजा ने आठ लाकड़ियां रो बंडल बांध दियो। और एक एक बेटा को तोड़वा हारू कियो। आठो बेटा खूब तपड़िया पर बंड़ल नहीं टूटियो। और फिर बंडल खोलीने एक-एक लाकड़ी वणा ने दी दी और तोड़वा ने कियो। तो सभी बेटों ने एक-एक लाकड़ी तोणी दीदी। फसे राजा ने आठो बेटा हारू कियो कि बेटा अगर तुम सभी मली ने रेगा तो तमे कोई न तोड़ी सके अगर आगवा-आगवा किया तो तमे कोई भी तोड़ी नाकेगा। अणी प्रकार ती राजा ने वणा आठो बेटा ने संगठण में रेवणा नी शिक्षा दी दी।

''प्यासा कौवा''

एक कागलो थो। वो मगरा में रहतो थो। एक दिन री बात है कि वो तरा मरी रियो थो। तो वो पूरा मगरा में घूम्यो पसे वणे एक माटलो नजर आयो। पसे बाद में वणी होस्यो कि वणी में थोड़ो पाणी है तो वै री टूंच वणी में नहीं पूगी। तो फेर वणी एक उपाय होस्यो कि कणी तरै ती अणी पाणी ने ऊपर लाकर पीवो है तो वणी बाद में धीरे-धीरे कांकरा रा टुकड़ा वणी माटला में फैक्या तो पसे बाद में पाणी ऊपर आग्यो पसे बाद में वणी पानी ने वे पीने उड़ग्यो। अणी प्रकार ती वणी खुद को काम कीदो और राजी वई ने उड़ग्यो।

गीत

सोना री थाली में भोजन परोस्या,

जिमगो भोला नंदलाल पाणीरो भरबा दे।

म्हारे पालणे में रोवे नंदलाल पाणीरो भरवा दे।

सोने की थाली में गंगाजल भर्यो।

थे तो पीवता जाजो रे नंदलाल पाणीरो भरबा दे।

सोने की झारी में गंगाजल भर्यो

थे तो पीवता जाजो रे नंदलाल पाणीरो भरबा दे।

भरबा दे सिरपे धरबा दे।

म्हारा पालणा में रोवे नंदलाल .....।

सोना चांदी रा ढोलिया ढलवाया

थे तो पोड़ता जाओ रे नंदलाल .....।

हरि रा चरणा में हरंद बोल्या।

अरे हरि रा चरणा में बलिआर।

म्हारे पालणे में रोवे नंदलाल .....।

वहां के परिवेश में गाये जाने वाले कुछ गीत भी लिखने की कोशिश की गई लेकिन समझ में नहीं आने के कारण नहीं लिख पाये। बाजार में वहां की स्थानीय भाषा की कुछ किताबें ढूंढने की कोशिश की गई। लेकिन, प्राप्त नहीं हो सकी। वागड़ी गीतों की कैसेट भी तलाश की गई पर वह भी प्राप्त नहीं हो सकी। वहां की भाषा में एकमात्र पुस्तक ''प्रयास'' से

प्राप्त हुई जो किसी स्थानीय व्यक्ति द्वारा भाषा पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए किया गया एक प्रयास है।

निष्कर्ष/टिप्पणियां/सुझाव

दिनांक 9.1.95 से 16.1.95तक किये गये अवलोकन एवं समुदाय से सम्पर्क द्वारा बनी कुछ ''समझ'' के आधार पर इस समूह की राय, सुझाव टिप्पणियां इस प्रकार हैं -

1. लोगों की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं है।
2. आय के साधन बहुत कम हैं।
3. लोगों का मुख्य धन्धा खेती है, मगर उसके लिये जमीन अपर्याप्त है।
4. लोगों का खान-पान, रहन-सहन, अत्यन्त साधारण है।
5. लोग स्वस्थ एवं मेहनती हैं।
6. समुदाय में देवी-देवताओं, भूत-प्रेत, चुड़ैल, जादू-टोने, आदि में विश्वास है।
7. लोगों ने शराब का प्रचलन आम है और खासकर ''महुआ'' की बनी शराब का सेवन अधिक करते हैं।
8. केन्द्रों पर जो बच्चे पढ़ने आते हैं वे पढ़ने के प्रति काफी उत्सुक लगते हैं, तथा अनुदेशक भी उनके साथ उन्हें सिखाने का प्रयास करते हैं। लेकिन, कुल मिलाकर शिक्षण-विधियां एवं बच्चों के बारे में समझ, स्वभाव, सीखने की प्रक्रियाएं आदि के बारे में उनकी समझ को पुष्ट किये जाने की आवश्यकता है। ◆

आदिवासियों के लिए शिक्षा

सब कुछ पूर्व निर्धारित पाठ्यक्रमों और मानदंडों के अन्तर्गत संचालित किया जाता है, जिसका स्थानीय वास्तविकता से कोई संबंध नहीं होता । अध्ययन से जो तथ्य सामने आये, उनसे पता चलता है कि आदिवासी क्षेत्रों में शिक्षा-प्रसार के मार्ग में अवांछित पर्यावरण (शाला, अध्यापक का व्यवहार, पाठ्यक्रम के संदर्भ में) तथा निर्धनता प्रमुख बाधाएं हैं । इन बाधाओं को दूर करने के संबंध में जो सुझाव विश्लेषण के बाद सामने आए हैं, उनमें करीब 70 प्रतिशत शिक्षा में बुनियादी सुधार तथा 25 प्रतिशत वांछित पर्यावरण और आर्थिक स्थिति ठीक करने के पक्ष में हैं । आदिवासियों के लिए यहां शिक्षा में बुनियादी सुधार से अर्थ शिक्षा को उनके जीवन के अनुकूल बनाना है । आज से करीब चार दशक पूर्व प्रसिद्ध मानवशास्त्री एलविन ने सुझाव दिया था कि इन उत्पीडित वन-संतांनों की आधुनिक सभ्यता के कथित प्रतिनिधियों से सुरक्षा की दृष्टि से यह आवश्यक है कि शिक्षा और शालाओं को आदिवासी संस्कृति, परंपरा तथा अन्य सामाजिक संस्थाओं के साथ जोड़ा जाए ।

रामशरण जोशी

'आदिवासी समाज और शिक्षा' से